Model: C0,P1

SrNo: 110-120-101-1102 / 1 Date: 21/11/2020

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**25/12/2007**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**10:15:00** ांटे
इष्ट	07:38:35 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:53:52 घंटे
वेलान्तर	00:00:12 घंटे
साम्पातिक काल	16:07:10 घंटे
सूर्योदय	07:11:34 घंटे
सूर्यास्त	17:30:33 घंटे
दिनमान	10:19:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	09:01:32 धनु
लग्न के अंश	27:23:15 मकर

चैत्रादि संवत / शक	2064 / 1929
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	2
तिथि समाप्ति काल	25:21:44
जन्म तिथि	2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल	24:47:56 घंटे
जन्म नक्षत्र	पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग	ब्रह्म
योग समाप्ति काल	09:43:43 घंटे
जन्म योग	ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण	तैतिल
करण समाप्ति काल	14:30:53 घंटे
जन्म करण	तैतिल

अवकहड ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मकर – शनि
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**पुनर्वसु – 2**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	ऐन्द्र
करण	तैतिल
गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	को–कोमल
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

ाात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2-7-12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मूषक
लग्न	कर्क
सूर्य	मीन
चन्द्र	कुम्भ
मंगल	मेष
बुध	मकर
गुरु	वृष
शुक्र	मिथुन
शनि	कुम्भ
राहु	कर्क

vedmuni
www.vedmuni.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	27:23:15	458:01:14	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	———
सूर्य			धनु	09:01:32	01:01:06	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	24:38:38	14:27:23	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
मंगल	व		मिथु	08:29:52	00:23:35	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
बुध		अ	धनु	13:19:50	01:36:02	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	सम राशि
गुरु		अ	धनु	07:29:10	00:13:46	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	स्वराशि
शुक्र			तुला	29:19:48	01:12:09	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	स्वराशि
शनि	व		सिंह	14:34:04	00:00:37	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		कुंभ	05:12:37	00:06:52	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	05:12:37	00:06:52	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	21:12:14	00:01:32	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	———
नेप			मक	26:05:05	00:01:41	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	———
प्लूटो			धनु	04:55:03	00:02:13	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	———
दशम भाव			वृश्चि	09:49:44	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:58:15

लग्न–चलित

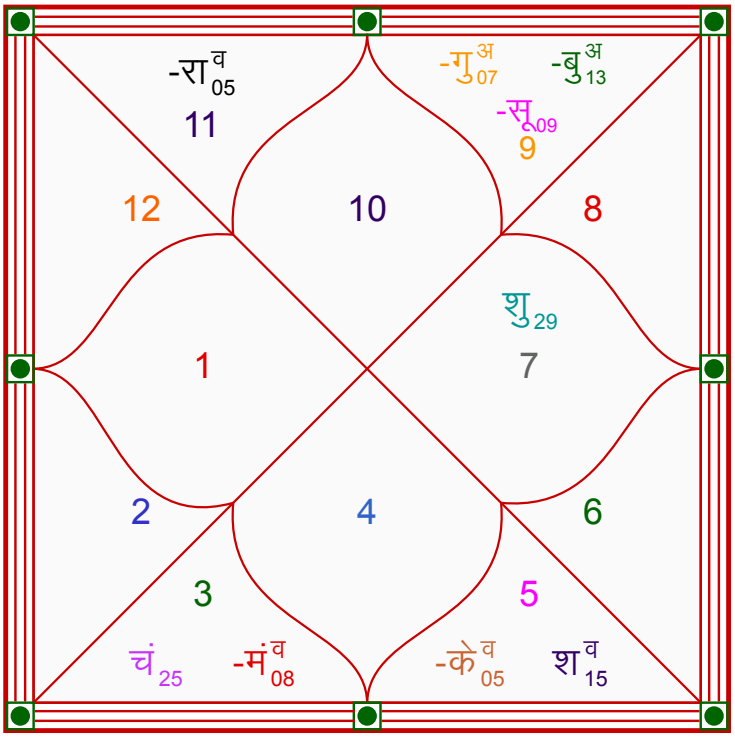

चन्द्र कुंडली

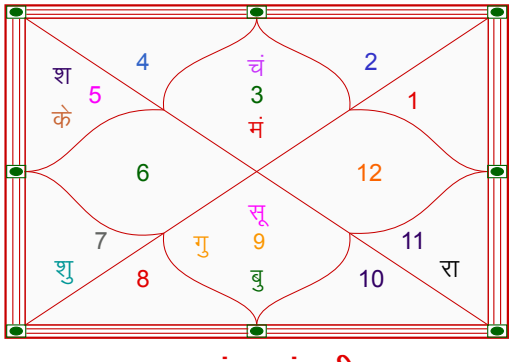

नवमांश कुंडली

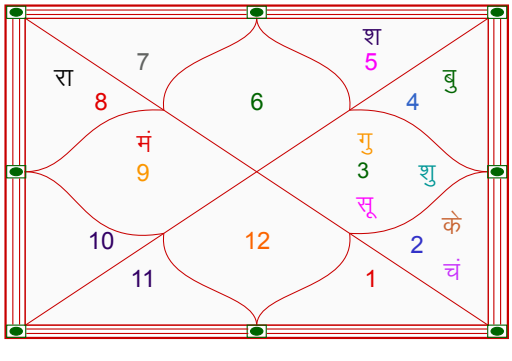

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	14:27:40	मकर	27:23:15
2	कुम्भ	14:27:40	मीन	01:32:05
3	मीन	18:36:30	मेष	05:40:54
4	मेष	22:45:19	वृष	09:49:44
5	वृष	22:45:19	मिथुन	05:40:54
6	मिथुन	18:36:30	कर्क	01:32:05
7	कर्क	14:27:40	कर्क	27:23:15
8	सिंह	14:27:40	कन्या	01:32:05
9	कन्या	18:36:30	तुला	05:40:54
10	तुला	22:45:19	वृश्चिक	09:49:44
11	वृश्चिक	22:45:19	धनु	05:40:54
12	धनु	18:36:30	मकर	01:32:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	27:23:15
2	मीन	08:21:00
3	मेष	12:43:02
4	वृष	09:49:44
5	मिथुन	03:29:20
6	मिथुन	27:42:23
7	कर्क	27:23:15
8	कन्या	08:21:00
9	तुला	12:43:02
10	वृश्चिक	09:49:44
11	धनु	03:29:20
12	धनु	27:42:23

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

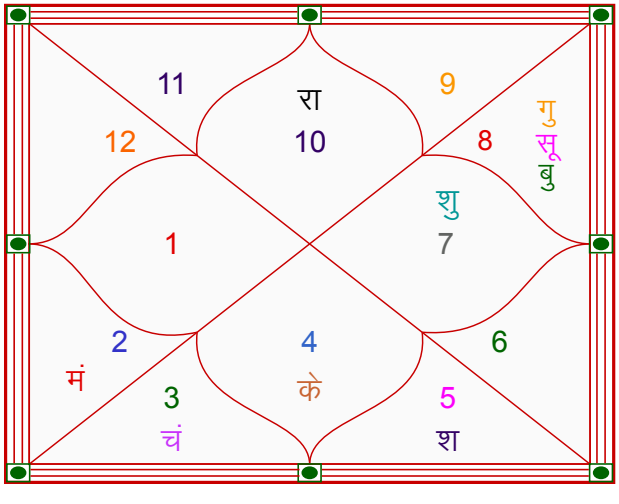

भाव कुंडली

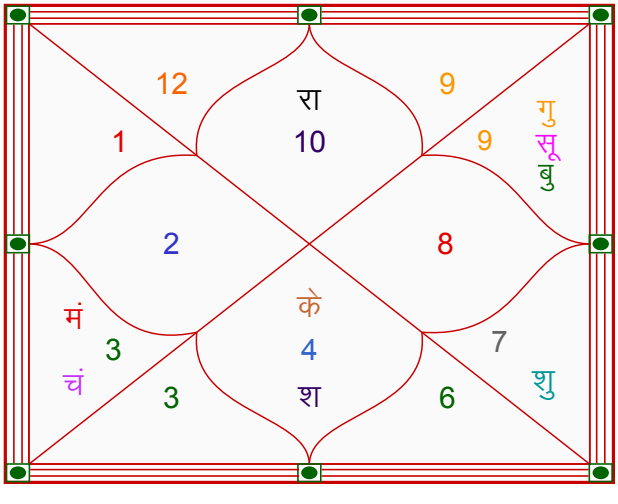

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	2	4	3	6	5	2	3	0	4	39
गुरु	4	2	5	7	3	5	6	2	6	6	5	5	56
मंगल	5	5	3	1	3	4	4	4	1	2	3	4	39
सूर्य	7	3	4	2	5	5	4	4	3	2	3	6	48
शुक्र	6	6	3	4	6	4	6	5	2	3	5	2	52
बुध	6	5	4	3	5	4	5	7	3	4	5	3	54
चंद्र	4	1	7	5	3	3	6	3	5	3	4	5	49
बिन्दु	36	25	29	24	29	28	37	30	22	23	25	29	337
रेखा	20	31	27	32	27	28	19	26	34	33	31	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	3	0	2	0	6	3	0	0	0	2	18
गुरु	1	0	0	5	0	3	1	0	3	4	0	3	20
मंगल	4	3	0	0	2	2	1	3	0	0	0	3	18
सूर्य	4	1	1	0	2	3	1	2	0	0	0	4	18
शुक्र	4	3	0	2	4	1	3	3	0	0	2	0	22
बुध	3	1	0	0	2	0	1	4	0	0	1	0	12
चंद्र	1	0	3	2	0	2	2	0	2	2	0	2	16
रेखा	19	8	7	9	12	11	15	15	5	6	3	14	124

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	3	0	2	0	6	1	0	0	0	2	16
गुरु	1	0	0	5	0	3	1	0	3	4	0	0	17
मंगल	1	2	0	0	2	2	1	3	0	0	0	3	14
सूर्य	2	0	1	0	2	2	1	2	0	0	0	4	14
शुक्र	1	0	0	2	4	1	3	3	0	0	2	0	16
बुध	3	0	0	0	2	0	1	1	0	0	1	0	8
चंद्र	1	0	3	2	0	0	2	0	2	2	0	0	12
रेखा	11	2	7	9	12	8	15	10	5	6	3	9	97

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	123	81	124	67	96	127	132
ग्रह पिंड	30	93	17	17	67	41	91
शोध्य पिंड	153	174	141	84	163	168	223

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 5 मास 3 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
25/12/2007		29/05/2018		29/05/2037		29/05/2054		29/05/2061	
29/05/2018		29/05/2037		29/05/2054		29/05/2061		29/05/2081	
	00/00/0000	शनि	01/06/2021	बुध	26/10/2039	केतु	26/10/2054	शुक्र	28/09/2064
	25/12/2007	बुध	09/02/2024	केतु	22/10/2040	शुक्र	26/12/2055	सूर्य	28/09/2065
बुध	05/05/2009	केतु	20/03/2025	शुक्र	23/08/2043	सूर्य	02/05/2056	चंद्र	30/05/2067
केतु	11/04/2010	शुक्र	20/05/2028	सूर्य	28/06/2044	चंद्र	01/12/2056	मंगल	29/07/2068
शुक्र	10/12/2012	सूर्य	02/05/2029	चंद्र	28/11/2045	मंगल	29/04/2057	राहु	30/07/2071
सूर्य	28/09/2013	चंद्र	01/12/2030	मंगल	25/11/2046	राहु	17/05/2058	गुरु	30/03/2074
चंद्र	28/01/2015	मंगल	10/01/2032	राहु	13/06/2049	गुरु	23/04/2059	शनि	29/05/2077
मंगल	04/01/2016	राहु	16/11/2034	गुरु	19/09/2051	शनि	01/06/2060	बुध	29/03/2080
राहु	29/05/2018	गुरु	29/05/2037	शनि	29/05/2054	बुध	29/05/2061	केतु	29/05/2081

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
29/05/2081		30/05/2087		29/05/2097		30/05/2104		30/05/2122	
30/05/2087		29/05/2097		30/05/2104		30/05/2122		00/00/0000	
सूर्य	16/09/2081	चंद्र	29/03/2088	मंगल	25/10/2097	राहु	10/02/2107	गुरु	18/07/2124
चंद्र	17/03/2082	मंगल	28/10/2088	राहु	13/11/2098	गुरु	06/07/2109	शनि	29/01/2127
मंगल	23/07/2082	राहु	29/04/2090	गुरु	20/10/2099	शनि	12/05/2112	बुध	26/12/2127
राहु	17/06/2083	गुरु	29/08/2091	शनि	29/11/2100	बुध	29/11/2114		00/00/0000
गुरु	04/04/2084	शनि	29/03/2093	बुध	26/11/2101	केतु	18/12/2115		00/00/0000
शनि	17/03/2085	बुध	29/08/2094	केतु	24/04/2102	शुक्र	17/12/2118		00/00/0000
बुध	22/01/2086	केतु	30/03/2095	शुक्र	24/06/2103	सूर्य	11/11/2119		00/00/0000
केतु	29/05/2086	शुक्र	28/11/2096	सूर्य	30/10/2103	चंद्र	12/05/2121		00/00/0000
शुक्र	30/05/2087	सूर्य	29/05/2097	चंद्र	30/05/2104	मंगल	30/05/2122		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 10 वर्ष 5 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि	
29/05/2018	
01/06/2021	
शनि	19/11/2018
बुध	24/04/2019
केतु	27/06/2019
शुक्र	27/12/2019
सूर्य	20/02/2020
चंद्र	22/05/2020
मंगल	25/07/2020
राहु	06/01/2021
गुरु	01/06/2021

शनि - बुध	
01/06/2021	
09/02/2024	
बुध	19/10/2021
केतु	15/12/2021
शुक्र	28/05/2022
सूर्य	16/07/2022
चंद्र	06/10/2022
मंगल	02/12/2022
राहु	29/04/2023
गुरु	07/09/2023
शनि	09/02/2024

शनि - केतु	
09/02/2024	
20/03/2025	
केतु	04/03/2024
शुक्र	11/05/2024
सूर्य	31/05/2024
चंद्र	03/07/2024
मंगल	27/07/2024
राहु	26/09/2024
गुरु	19/11/2024
शनि	22/01/2025
बुध	20/03/2025

शनि - शुक्र	
20/03/2025	
20/05/2028	
शुक्र	29/09/2025
सूर्य	26/11/2025
चंद्र	02/03/2026
मंगल	09/05/2026
राहु	29/10/2026
गुरु	01/04/2027
शनि	02/10/2027
बुध	13/03/2028
केतु	20/05/2028

शनि - सूर्य	
20/05/2028	
02/05/2029	
सूर्य	06/06/2028
चंद्र	05/07/2028
मंगल	25/07/2028
राहु	15/09/2028
गुरु	01/11/2028
शनि	26/12/2028
बुध	13/02/2029
केतु	05/03/2029
शुक्र	02/05/2029

शनि - चंद्र	
02/05/2029	
01/12/2030	
चंद्र	19/06/2029
मंगल	23/07/2029
राहु	18/10/2029
गुरु	03/01/2030
शनि	04/04/2030
बुध	25/06/2030
केतु	29/07/2030
शुक्र	02/11/2030
सूर्य	01/12/2030

शनि - मंगल	
01/12/2030	
10/01/2032	
मंगल	25/12/2030
राहु	23/02/2031
गुरु	18/04/2031
शनि	22/06/2031
बुध	18/08/2031
केतु	11/09/2031
शुक्र	17/11/2031
सूर्य	07/12/2031
चंद्र	10/01/2032

शनि - राहु	
10/01/2032	
16/11/2034	
राहु	14/06/2032
गुरु	31/10/2032
शनि	14/04/2033
बुध	08/09/2033
केतु	08/11/2033
शुक्र	30/04/2034
सूर्य	21/06/2034
चंद्र	16/09/2034
मंगल	16/11/2034

शनि - गुरु	
16/11/2034	
29/05/2037	
गुरु	19/03/2035
शनि	13/08/2035
बुध	22/12/2035
केतु	14/02/2036
शुक्र	17/07/2036
सूर्य	01/09/2036
चंद्र	17/11/2036
मंगल	10/01/2037
राहु	29/05/2037

बुध - बुध	
29/05/2037	
26/10/2039	
बुध	01/10/2037
केतु	21/11/2037
शुक्र	17/04/2038
सूर्य	31/05/2038
चंद्र	12/08/2038
मंगल	02/10/2038
राहु	11/02/2039
गुरु	09/06/2039
शनि	26/10/2039

बुध - केतु	
26/10/2039	
22/10/2040	
केतु	16/11/2039
शुक्र	15/01/2040
सूर्य	02/02/2040
चंद्र	04/03/2040
मंगल	25/03/2040
राहु	18/05/2040
गुरु	05/07/2040
शनि	01/09/2040
बुध	22/10/2040

बुध - शुक्र	
22/10/2040	
23/08/2043	
शुक्र	13/04/2041
सूर्य	03/06/2041
चंद्र	29/08/2041
मंगल	28/10/2041
राहु	01/04/2042
गुरु	17/08/2042
शनि	28/01/2043
बुध	24/06/2043
केतु	23/08/2043

बुध - सूर्य	
23/08/2043	
28/06/2044	
सूर्य	07/09/2043
चंद्र	03/10/2043
मंगल	21/10/2043
राहु	07/12/2043
गुरु	17/01/2044
शनि	07/03/2044
बुध	20/04/2044
केतु	08/05/2044
शुक्र	28/06/2044

बुध - चंद्र	
28/06/2044	
28/11/2045	
चंद्र	11/08/2044
मंगल	10/09/2044
राहु	26/11/2044
गुरु	03/02/2045
शनि	26/04/2045
बुध	09/07/2045
केतु	08/08/2045
शुक्र	02/11/2045
सूर्य	28/11/2045

बुध - मंगल	
28/11/2045	
25/11/2046	
मंगल	19/12/2045
राहु	11/02/2046
गुरु	01/04/2046
शनि	28/05/2046
बुध	18/07/2046
केतु	08/08/2046
शुक्र	08/10/2046
सूर्य	26/10/2046
चंद्र	25/11/2046

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

Sample

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	नीलम		दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
भाग्य रत्नः	पन्ना		कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा		व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
दशा	**रत्न**	**क्षमता**	**मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ**
गुरु	हीरा	92%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
25/12/2007	नीलम	64%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
29/05/2018	मूंगा	47%	कम खर्च, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
शनि	हीरा	100%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
29/05/2018	नीलम	77%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
29/05/2037	पन्ना	61%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
बुध	हीरा	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
29/05/2037	पन्ना	67%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
29/05/2054	नीलम	64%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
केतु	हीरा	100%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
29/05/2054	पन्ना	55%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
29/05/2061	नीलम	52%	दुर्घटना से बचाव, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
शुक्र	हीरा	100%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
29/05/2061	नीलम	70%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
29/05/2081	पन्ना	61%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, भाग्योदय
सूर्य	हीरा	92%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
29/05/2081	पन्ना	55%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
30/05/2087	नीलम	52%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
चन्द्र	हीरा	100%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
30/05/2087	नीलम	64%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, घी
29/05/2097	पन्ना	61%	शत्रु व रोग मुक्ति, दम्पति, भाग्योदय

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

साढ `साती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

ि तीय चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह

vedmuni
www.vedmuni.com

साढ `साती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नम ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं स ऊँ भूर्भुव स्व ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नम ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शनि, शुक्र, बुध
		मारक	-	सूर्य, चंद्र, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, राहु, गुरु
		मारक	-	केतु, मंगल, चंद्र

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	46%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	43%	शत्रु व रोग मुक्ति, दम्पति
मंगल	39%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, धनार्जन
बुध	45%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गुरु	51%	कम खर्च, पराक्रम
शुक्र	75%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शनि	47%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
राहु	60%	धन, दुर्घटना से बचाव
केतु	30%	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
गुरु	29/05/2018	85	52	50	60	88	43	58	48	50
शनि	29/05/2037	45	27	25	70	60	68	86	61	52
बुध	29/05/2054	85	27	38	85	75	68	58	48	50
केतु	29/05/2061	45	27	50	57	60	68	61	36	77
शुक्र	29/05/2081	29	44	54	53	44	100	54	77	46
सूर्य	30/05/2087	85	52	50	72	88	43	46	36	37
चन्द्र	29/05/2097	54	84	69	53	44	72	42	52	21
मंगल	30/05/2104	54	84	82	28	56	72	42	52	46
राहु	30/05/2122	29	44	42	41	44	85	54	92	21

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती है परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पति

के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।

Sample

कालसर्प योग

अग्रे राहुरध केतु सर्वे मध्यगता ग्रहा ।
योगाऽयं कालसर्पा्ृयो शी ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।